www.navbharattimes.com › महानगर › मुंबई › शुक्रवार, 27 जुलाई 2018 › मूल्य 4.00 रु. । पेज 14* ।

YOUNG INDIA > YOUNG PAPER

आर. एन. आई. पंजीयन नंबर 1613/57

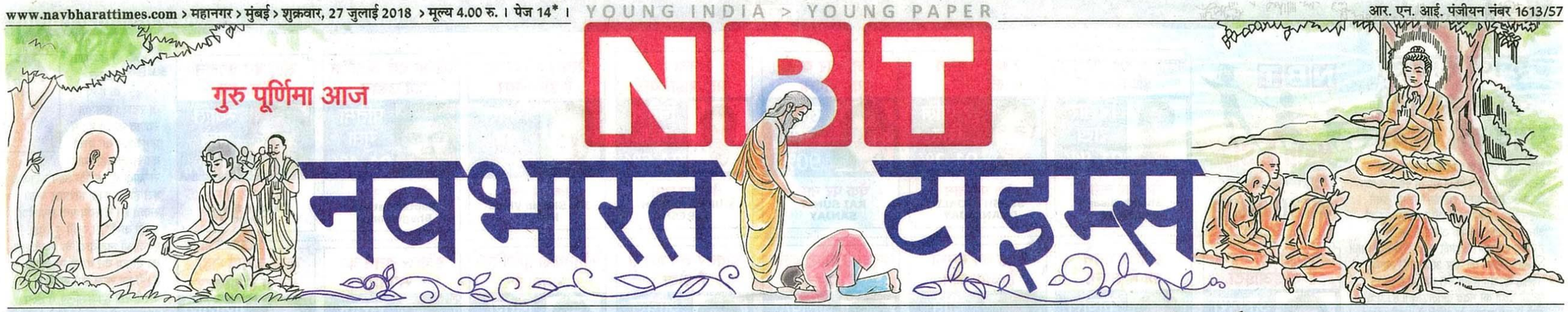

दूसरों की दुनिया बदलने वाले दो भारतीयों को मैगसायसाय

मुंबई के डॉ. वटवानी और लद्दाख के वांगचुक को मिलेगा एशिया का 'नोबेल'

■ **प्रेट्र, मनीला:** एशिया के नोबेल पुरस्कार माने जाने वाले रैमन मैगसायसाय पुरस्कार के लिए छह लोगों को चुना गया है, जिनमें दो भारतीय भी हैं। मुंबई के भरत वटवानी को सड़क पर भीख मांगने वाले हजारों मानसिक रोगियों का इलाज कराने और उन्हें उनके परिवार से मिलवाने के लिए पुरस्कार दिया गया है। वहीं, लद्दाख के सोनम वांगचुक को प्रकृति, संस्कृति और शिक्षा के जरिए सामुदायिक प्रगति के लिए काम करने को लेकर यह पुरस्कार मिला है। वांगचुक 2009 में तब मशहूर हुए थे, जब आमिर खान की फिल्म 'थ्री इडियट्स' में उनके ही जीवन से प्रेरित होकर फुनसुक वांगडू का किरदार बनाया गया। उन्हें रियल लाइफ फुनसुक वांगडू भी कहा जाता है। इस तरह, इन दोनों का मुंबई कनेक्शन है। वटवानी मुंबई में जन-कल्याण का काम करते हैं, जबकि वांगचुक का व्यक्तित्व बॉलिवुड की एक सुपर हिट फिल्म में रहा है।

1957
में फिलिपींस के राष्ट्रपति की एक विमान हादसे में मौत के बाद रैमन मैगसायसाय पुरस्कार शुरू हुआ था

31
अगस्त को मनीला में दिए जाएंगे यह पुरस्कार

इलाज के साथ आश्रय भी

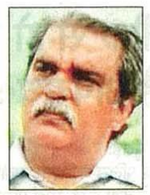

डॉक्टर भरत वटवानी और उनकी पत्नी डॉक्टर स्मिता वटवानी ने पहले छोटे स्तर पर ही दिमागी तौर पर बीमार सड़कों पर रहने वाले लोगों का निजी क्लिनिक में इलाज करवाना शुरू किया था। इसके बाद उन्होंने सड़कों पर रह रहे मानसिक रोगियों को आश्रय देने, खाना मुहैया कराने, दिमागी इलाज कराने और परिवार से मिलवाने के मकसद से 1988 में श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन की स्थापना की। इस काम में वटवानी परिवार की मदद पुलिस, सामाजिक कार्यकर्ता और कई अन्य लोग भी करते थे।

ऐसे लिया सेवा का व्रत

- डॉ भरत वटवानी और उनकी पत्नी स्मिता मनोचिकित्सक हैं
- एक बार डॉ. वटवानी ने एक ऐसे लड़के का इलाज किया था, जिसने बीएससी के बाद लैबोरेट्री टेक्नॉलजी में डिप्लोमा किया था और उसके पिता आंध्र प्रदेश में उच्च अधिकारी थे
- इसी के बाद उन्होंने सड़कों पर भटकते मानसिक रोगियों की सेवा का व्रत ले लिया
- 1989 में पति-पत्नी ने दिमागी तौर पर बीमार और बेसहारा लोगों के लिए कर्जत में पुनर्वास केंद्र खोला
- पिछले 14 सालों में यह केंद्र 5,500 बेसहारा लोगों का सहारा बना है ▸▸ पेज 3

पढ़ाई को बनाया आंदोलन

सोनम वांगचुक ने इंजिनियरिंग करने के बाद स्टूडेंट्स एजुकेशन ऐंड कल्चरल मूवमेंट ऑफ लद्दाख (SECMOL) की स्थापना करके कोचिंग शुरू की। 1994 में वांगचुक ने 'ऑपरेशन न्यू होप' शुरू किया। इससे पढ़ने वाले छात्रों के मैट्रिकुलेशन एग्जाम्स में सफलता दर में तेजी से वृद्धि देखी गई। जहां, 1996 में सिर्फ 5 प्रतिशत छात्र ही पास हो पाते थे 2015 में बढ़कर 75 प्रतिशत हो गए थे। जहां 1996 में सिर्फ 5 प्रतिशत विद्यार्थी ही पास हो पाते थे, वहीं 2015 में यह बढ़कर 75 प्रतिशत हो गया था।

ये भी हैं विजेता

यह वार्षिक सम्मान पाने वाले अन्य विजेताओं में कंबोडिया के यौक चैंग, पूर्वी तिमोर के मारिया द लॉर्डेस मार्टिंस क्रूज, फिलीपींस के हॉवर्ड डी और वियतनाम के वो थी होंग येन शामिल हैं। यौक चैंग को इलाज और न्याय के लिए ऐतिहासिक स्मृति को संरक्षित करने, मार्टिंस क्रूज को ईंट दर ईंट एक सरोकारी समाज का निर्माण करने, हॉवर्ड डी को शांति, न्याय और आर्थिक विकास के मानवीय चेहरे का विजेता बनने और होंग येन को दिव्यांगों के लिए अवसरों का निर्माण करने के लिए यह पुरस्कार देने की घोषणा की गई है।

मानसिक पीड़ितों की सेवा में जुटे मन का मान

मैगसायसाय पुरस्कार विजेता डॉ. भरत वटवानी से एनबीटी की खास बातचीत

Vimal.Mishra
@timesgroup.com

■ **मुंबई :** 'इतने साल कोल्हू के बैल की तरह खटना पड़ा है, तब जाकर जो काम कर रहा हूं उसे मान्यता मिली है', मरीजों के अनवरत तांत के साथ बधाई के लिए निरंतर आ रहे फोन कॉल्स और इंटरव्यूज के तकाजों के बीच डॉ. भरत वटवानी ने 'नवभारत टाइम्स' से आए फोन कॉल के बारे में सुना, तो फौरन लाइन पर आए। इस उद्गार के साथ कि 'नवभारत टाइम्स' उन पहले अखबारों में से है, जिन्होंने मानसिक रोगियों के लिए मेरे काम का नोटिस लिया।' डॉ. वटवानी उस रेमन मैगसायसाय अवॉर्ड के विजेता हैं, जो एशिया के नोबेल पुरस्कार जैसा दर्जा रखता है। उनके साथ यह पुरस्कार लद्दाख के सोनम वांगचुक को भी मिला है। पुरस्कार के लिए वटवानी के नाम की घोषणा करते हुए मैगसायसाय अवार्ड फाउंडेशन ने इसके लिए 'भारत के मानसिक रूप से पीड़ित निराश्रितों को सहयोग एवं उपचार मुहैया कराने में उनके साहस और करुणा तथा समाज द्वारा नजरंदाज किये गए व्यक्तियों की गरिमा को बहाल करने के कार्य के प्रति उनके दृढ़ और उदार समर्पण' को श्रेय दिया है।

'मानसिक रोगियों पर बढ़ेगा फोकस' : 'सवाल मेरे व्यक्तिगत सम्मान का नहीं है', डॉ. वटवानी का कहना है, 'इस पुरस्कार का महत्व इस बात में है कि इससे मानसिक रोगियों पर लोगों का फोकस बढ़ेगा। उनका शिकार होकर दर-दर भटक रहे गरीब-गुरबों, बेघरबारों, अनाथों और बेसहारों की पीड़ा के बारे में जागरूकता बढ़ेगी।' अपनी बात को विस्तार देते हुए उन्होंने कहा, 'निश्चित रूप से भारत में मानसिक रोगों के प्रति जागरूकता बढ़ी है, पर अब भी यह जिस स्तर पर होनी चाहिए वह नहीं है। ऐसे रोगियों को अब भी हिकारत से देखा जाता है। यहां तक कि परिवार के सदस्य भी उन्हें वह सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार नहीं देते, जिसकी उन्हें अपेक्षा है।'

कैसे शुरू की सेवा यात्रा: डॉ. वटवानी ने अपनी मनोचिकित्सक पत्नी स्मिता के साथ मानसिक रूप से पीड़ित बेसहारा लोगों को इलाज के लिए बोरीवली में अपने निजी क्लीनिक से शुरुआत की। उन्होंने 1988 में श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन की स्थापना जो सड़कों पर बेसहारा फिरने वाले मानसिक रूप से बीमार लोगों को मुफ्त आश्रय, भोजन और मनोरोग उपचार मुहैया कराता है। 1989 में उन्होंने ऐसे लोगों के लिए कर्जत में पुनर्वास केंद्र भी खोला। पिछले 14 सालों में यह केंद्र 5,500 बेसहारा लोगों का सहारा बन चुका है और ऐसे बहुत से लोगों को उनके परिवारों से मिला चुका है।

जिनकी की मदद, उनके परिजन कृतज्ञ: श्रद्धा फाउंडेशन की वेबसाइट पर तेलंगाना के रामबाबू नामक डिमेन्शिया प्रभावित एक ऐसे व्यक्ति की कहानी अंकित है, जो कर्जत रेलवे स्टेशन पर बेसहारा मिले थे और उन्हें घर के बारे में भी कुछ याद नहीं था। श्रद्धा रिहैबिलिटेशन फाउंडेशन, कर्जत में एक महीने के इलाज के बाद संस्था के कार्यकर्ताओं ने उन्हें उनके घर पहुंचा दिया था। बहुत बुरी हालत में कार्यकर्ताओं द्वारा यहां इलाज के लिए लाई गईं आशा आज पूरी तरह चंगी हैं। बिहार के राजीव को तो उनके घरवाले मृत ही मान चुके थे। आज इन लोगों और उनके परिवारों को डॉ. वटवानी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं मिलते। डॉ. वटवानी बताते हैं, 'मैं यह पुरस्कार देश के उन लाखों लोगों की ओर से स्वीकार कर रहा हूं जिन्हें उचित चिकित्सा और पुनर्वास के साथ अपने ही समाज से बेहतर व्यवहार की अपेक्षा है।'